ईश्वरचंद्र विद्यासागर

–पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

सुधार तथा परोपकार के देवदूत— पं० ईश्वरचंद्र विद्यासागर

गरीबी को प्रायः लोग अभिशाप मानते हैं और ऐसा सोचते हैं कि जो गरीब होता है, वह संसार में कोई उन्नति नहीं कर सकता और न कोई उल्लेखनीय काम ही। किंतु पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने अपने जीवन द्वारा इस मान्यता को उन लोगों की निराशात्मक भावना सिद्ध कर दिया, जो परिश्रम तथा पुरुषार्थ का महत्त्व नहीं समझते अथवा गरीबी का बहाना लेकर अपनी अकर्मण्यता तथा अयोग्यता को छिपाना चाहते हैं। अन्यथा गरीबी एक ऐसा अवसर है, जो उन्नति एवं प्रगति की संभावनाएँ उपस्थित करता है।

यह कथन केवल सूक्तिमात्र नहीं है। इसके पीछे एक मनोवैज्ञानिक यथार्थ निहित है। वह यह कि धन की सुविधा में कोई विरले ही ऐसे होते हैं, जिन्हें जीवन में कोई उल्लेखनीय प्रगति करने की प्रवृत्ति होती है, अन्यथा अधिकांश वे लोग उसके उपभोग में लगकर मानव-जीवन की सार्थकता भुला बैठते हैं, जबकि निर्धनता की स्थिति एक तो स्वयं ही निरर्थक भोगों की सुविधा उपस्थित नहीं होने देती, जिससे मनुष्य की बहुत-सी शक्ति तथा समय सुरक्षित रहता है। दूसरे वह किसी भी स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए एक चुनौती होती है, जिसकी कठिनाइयाँ कर्मठता की ओर अग्रसर करती हैं। किंतु निर्धनता के बीच इस सौभाग्य का अधिकारी होता वही है, जो उस स्थिति को आत्मा से स्वीकार नहीं करता और उसे बदल डालने में प्रयत्न एवं परिश्रम की किसी भी सीमा तक बढ़ जाने में कृपणता नहीं करता।

पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने गरीबी को एक चुनौती माना और अपने अखंड अध्यवसाय के बल पर उसे जीतकर यह प्रमाणित कर दिया कि संसार में किसी भी कर्तृत्वशील व्यक्ति के लिए निर्धनता की स्थिति जीवन-विकास में अवरोध नहीं बन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकती। पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने न केवल आर्थिक प्रगति ही करके दिखला दी, वरन् उन गुणों को भी आत्मसात् करके दिखला दिया; जो मनुष्यता की शोभा, जीवन की महत्ता और समाज के संराधक होते हैं और जिनका आग्रह अनायास ही आत्मा की ओर खुलने वाले उन झरोखों का उद्घाटन कर देता है, जिसके द्वारा ईश्वरीय आलोक का समागमन होता है।

कलकत्ता से बीस मील दूर पश्चिम में स्थित वीरसिंह गाँव के जिस परिवार में २६ सितंबर १८२० को पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर का जन्म हुआ था, वह कितना गरीब था ? इसका अनुमान इससे ही लगाया जा सकता है कि उनके पिता ठाकुर दास न जाने कितने दिन जीविका की चिंता से, भूखे-प्यासे कलकत्ता की सड़कों पर फिरे हैं और उन्हें दो रुपये माहवार की एक नौकरी मिली तो घर में उत्सव जैसी खुशी छा गयी। ऐसे निर्धन परिवार में एक अध्यवसायी तथा गुणी बालक ने जन्म लेकर अपने साथ अपने उस कुल और कुटुंब को भी स्मरणीय बना दिया, जिसको सामान्य जीवन की आवश्यकताएँ भी दुर्लभ थीं।

किसी प्रकार धैर्य तथा संतोष के सहारे जीकर ईश्वरचंद्र ने गाँव की पाठशाला में प्रवेश पाया और परिश्रमपूर्वक पढ़कर उसकी सारी कक्षाएँ यथा समय पास कर लीं। अब इसके आगे पढ़ाई के कोई साधन न थे और उनके पिता ने उन्हें बिठाल दिया। आगे की शिक्षा कलकत्ता में संभव थी। यह परिवार के वश की बात न थी। तब भी उनके पिता के मस्तिष्क से यह बात न निकली कि वे संतान को सुयोग्य बनाने के लिये अपने कर्तव्य को पूरा नहीं कर पा रहे हैं।

श्री ठाकुरदास की यह कसक उन्हें कलकत्ता में ईश्वरचंद्र की शिक्षा के लिये अवसर खोजते रहने की प्रेरणा देती रही। वे जिन महानुभाव के यहाँ कार्य करते थे, वे बड़े सज्जन व्यक्ति थे और ठाकुरदास ने अपनी ईमानदारी तथा परिश्रम से उनकी प्रसन्नता भी प्राप्त कर ली थी। एक दिन अवसर पाकर उन्होंने अपने मालिक श्री जगदुर्लभ सिंह से अपनी इच्छा का प्रकाशन किया और बताया कि ईश्वरचंद्र का मन पढ़ने में बहुत लगता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसने वीरसिंह की पाठशाला की सारी कक्षाएँ प्रथम श्रेणी में पास कर ली हैं। गाँव के शिक्षक श्री कालीकांत का कहना है कि ईश्वर बड़ा चपल बुद्धि का लड़का है। यदि उसे पढ़ने का अवसर मिलता रहा तो एक योग्य व्यक्ति बन सकता है, नहीं तो उसकी बुद्धि सदुपयोग के बिना गलत मार्ग पर जा सकती है और ऐसी अवस्था में वह उपद्रवी होकर समाज के लिए कष्टदायक बन सकता है। मेरा अपना जो कुछ बनना था, वह तो बन चुका किंतु यह अवश्य चाहता हूँ कि ईश्वरचंद्र कुछ पढ़-लिखकर किसी योग्य बन जाता, नहीं तो लोग यह लांछन लगायेंगे कि जब योग्य बना सकने की क्षमता नहीं थी तो बच्चों को जन्म देंने का क्या अधिकार था ? मेरा निवेदन है कि आप इस संबंध में मेरी कुछ सहायता करें, जिसके उपलक्ष में मुझसे कोई अतिरिक्त काम भी ले सकते हैं। श्री जगदुर्लभ सिंह ने ठाकुरदास में पुत्र की प्रगति के लिए एक सच्चे पिता की पीड़ा देखी और एक अच्छे मनुष्य के नाते सहायता करने का वचन दे दिया।

श्री ठाकुरदास जी तुरंत गाँव आये और ईश्वरचंद्र को साथ लेकर कलकत्ता चल दिये। बीस मील की दूरी थी और सवारी का कोई साधन नहीं था। अस्तु, पिता-पुत्र उस लंबी यात्रा पर पैदल ही चल पड़े। इस समय ईश्वरचंद्र की आयु लगभग आठ वर्ष की थी। ठाकुरदास जानते थे कि बीस मील की पैदल यात्रा उसके लिए कठिन थी और गोद में लेकर भी चला नहीं जा सकता था। निदान उन्होंने उसे बहलाये रखने के लिये शिक्षा की उपयोगिता तथा उसकी प्रगति के उपायों पर बातें करना प्रारंभ कर दिया। साथ ही वे उत्साहित करने के लिये मील के पत्थरों पर लिखे अंक दिखलाकर यह भी कहते चले कि अब हम लोगों ने इतना मार्ग पूरा कर लिया कि कलकत्ता केवल इतने मील रह गया है। ईश्वरचंद्र बड़े ध्यान से पिता की बातें सुनता रहा और मील के पत्थरों पर लिखे अंग्रेजी अंक देखता और हृदयंगम करता चला गया। मानव-मस्तिष्क का सहज-स्वभाव होता है कि वह जिस दिशा और वातावरण में सक्रिय रखा जाता है, उसी ओर प्रगति करता और उसी के अनुसार गुण-दोषों को ग्रहण करता रहता है। पिता के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उस वार्तालाप से ईश्वरचंद्र के मस्तिष्क में शिक्षा का महत्त्व और उसे प्राप्त करने के लिए एकाग्र परिश्रम की आवश्यकता का विश्वास गहराई के साथ बैठ गया। उसके हृदय में शिक्षा के प्रति जगी उत्सुकता ने उसे क्लांति का अनुभव नहीं होने दिया। वह निरंतर उत्साह के साथ चलता रहा।

जिस प्रकार धैर्य का सहारा लेने से आपत्ति और आख्यान के सहारे रात कट जाती है, उसीप्रकार वार्तालाप के सहारे उन दोनों का रास्ता भी सरलतापूर्वक कट गया और वे कलकत्ता में अपने गंतव्य स्थान पर पहुँच गये। श्री जगदुर्लभ सिंह ने बच्चे की योग्यता परखने के लिए उससे पूछा कि, बेटे क्या पढ़-लिख सकते हो ? ईश्वरचंद्र ने तुरंत उत्तर दिया कि मैं बंगला लिख-पढ़ सकने के साथ अंग्रेजी के अंक भी लिख-पढ़ और जोड़ सकता हूँ। श्री जगदुर्लभ सिंह ने उसे अंग्रेजी अंकों का एक छोटा-सा बिल जोड़ने को दिया। ईश्वरचंद्र बिना किसी झिझक के बिल ले लिया और विश्वासपूर्वक उसे जोड़कर दिखला दिया। ठाकुरदास को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ; उन्होंने पूछा कि—क्या गाँव की पाठशाला में तुम्हें अंग्रेजी की गिनती पढ़ाई गई है ? ईश्वरचंद्र ने बतलाया कि अंग्रेजी के अंक उसे पाठशाला में नहीं सिखाये गये हैं, बल्कि उसने उन्हें रास्ते में मील के पत्थरों से सीख लिया है। ठाकुरदास को जहाँ बच्चे की ग्रहणशीलता पर हर्ष हुआ, वहाँ यह विश्वास भी हो गया कि प्रेमपूर्वक बच्चों पर किया हुआ कोई भी प्रयास व्यर्थ नहीं जाता।

शिक्षा के अनुसार ही बच्चों का जीवन ढलता है, इसलिए इस विचार से कि ईश्वरचंद्र भी कहीं तत्कालीन विद्यार्थियों की तरह बाबूगीरी की ओर प्रवृत्त होकर भारतीयता से विमुख न हो जाये और समाज के लिए अनुपयोगी सिद्ध हो, ठाकुरदास ने उन्हें कलकत्ता के संस्कृत कॉलेज में प्रवेश दिलाना ही उचित समझा।

ईश्वरचंद्र के लिए संस्कृत सर्वथा एक नई भाषा थी, किंतु उन्होंने साहस तथा परिश्रमपूर्वक उसे पढ़ना शुरू किया। उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे कॉलेज के सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी बनकर रहेंगे। इसके लिये कितना ही परिश्रम क्यों न करना पड़े, करेंगे। उन्होंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसा किया भी। कॉलेज में पूरी तन्मयता के साथ पढ़ने के बाद वे घर पर भी बहुत समय तक पढ़ा करते थे। सबेरे एक पहर रात रहे, वे उठ जाते थे और अपना पाठ याद करने लगते थे। उसके बाद वे अपने साथ दो-तीन आदमियों का भोजन बनाते थे, बर्तन साफ करते थे। घर की सफाई और बाजार से सारा सामान लाना भी उन्हीं का काम था। लकड़ी चीरने और पानी भरने के साथ इन्हें अपने पिता और छोटे-भाई के कपड़े भी हाथ से साफ करने होते थे। इतना सब परिश्रम करने के बाद भी वे कभी थकान की शिकायत नहीं करते थे। इसी प्रकार वे शाम को भी सारा काम करते और आधी रात तक खुद पढ़ने के साथ अपने छोटे भाई को भी पढ़ाते थे।

रात में पढ़ते-पढ़ते जब कभी इनके दीपक का तेल समाप्त हो जाता था तो यह जाकर सड़क पर लगी लालटेन के नीचे बैठकर पढ़ते थे और जब तक दिन का पाठ याद करने के बाद दूसरे दिन के पाठ की तैयारी नहीं कर लेते थे, कभी सोते न थे। वे अपना पाठ नित्य नियम से पिता को सुनाकर उसकी पुष्टि कर लिया करते थे।

विद्यासागर के इस महामानवीय परिश्रम का फल यह हुआ कि उन्होंने कालेज की परीक्षाएँ ६-६ माह में ही उत्तम श्रेणी में पास कर लीं और १६ वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते कॉलेज के सर्वोत्तम विद्यार्थी होने का अपना निश्चय ही पूरा नहीं कर लिया, बल्कि व्याकरण, साहित्य, अलंकार, स्मृति, तर्क, वेदांत आदि विषयों में पारंगति भी प्राप्त कर ली। माघ, किरात, मेघदूत, शकुंतला, उत्तर रामचरित्र, मुद्राराक्षस, कादंबरी विक्रमोर्वशीय, दशकुमारचरित, कौमुदी, निरुक्त, मिताक्षरा, बाणभट्ट, मनु-संहिता आदि ग्रंथ तो उन्हें कंठस्थ से ही हो गये थे। विद्याध्ययन में निरंतर परिश्रम करने से इनके स्मृतिकोष यहाँ तक खुल गये थे कि वे जिस श्लोक, पद अथवा प्रकरण को दो-एक बार पढ़ लेते थे, वे उन्हें स्मरण हो जाते थे। उस समय के संस्कृत के विद्वानों में श्री ईश्वरचंद्र का सर्वश्रेष्ठ स्थान था। संस्कृत की लिखी इनकी गद्य तथा पद्य की रचनाएँ इतनी शुद्ध तथा श्रेष्ठ होती थीं कि उस संबंध में इन्होंने अनेकों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बार तत्संबंधी पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र प्राप्त किये। कॉलेज की योग्यता संबंधी कोई भी छात्रवृत्ति ऐसी न थी, जो ईश्वरचंद्र ने प्राप्त न कर ली हो।

अन्य विद्यार्थी उनकी इस सफलता को देखकर कहा करते थे कि ईश्वरचंद्र तुम बड़े भाग्यवान् हो। हर साल प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते हो और हर कक्षा की छात्रवृत्ति पा जाते हो। ईश्वरचंद्र उनका समाधान करते हुए कहा करते थे कि इसमें भाग्य की कोई बात ही नहीं है। यह सब उस परिश्रम का सुफल है, जिसे मैंने प्रयत्नपूर्वक अपने जीवन में स्वभाव सिद्ध किया है। परिश्रम मानव-जीवन का देवता है, जो अपनी साधना से प्रसन्न होकर संसार का हर अभीष्ट प्रदान कर देता है। आप लोग भी उसी श्रम देवता की उपासना कीजिये। आप भी प्रथम आने और छात्रवृत्तियाँ पाने लगेंगे।

यद्यपि श्री ईश्वरचंद्र जी इतने गरीब थे कि आधा पेट भोजन तो मामूली बात थी, सप्ताह में दो-एक बार निराहार भी रहना पड़ जाता था, तथापि वे हृदय से इतने उदार तथा दयालु थे कि अपनी छात्रवृत्तियों का अधिकांश भाग निर्धन विद्यार्थियों की सहायता में खर्च कर देते थे। जब वे किसी विद्यार्थी को फटे-पुराने कपड़े पहने देखते थे, उनको ऐसा लगता था, मानो उनका भाई ही कपड़ों के अभाव में चिथड़े लपेटे है। उनका हृदय सहानुभूति से भर जाता और वे तुरंत उसके लिए कपड़े बनवा देते। गरीब विद्यार्थियों को शिक्षा-शुल्क और पुस्तकें खरीदकर दे देने में उन्हें बड़ा आत्म-सुख मिलता था। इस प्रकार श्री ईश्वरचंद्र ने अपनी जानकारी में किसी भी विद्यार्थी को निर्धनता के कारण शिक्षा से वंचित नहीं होने दिया। यथासंभव सबकी सहायता करते रहते थे। इस आर्थिक सहायता के साथ-साथ वे अपने सहपाठियों को अध्ययन में भी सहायता करते रहते थे। अपने पाठ पूरे कर लेने के बाद जो समय शेष बचता था, उसमें कमजोर विद्यार्थियों को पढ़ाया करते थे। उनकी सदैव ही यह इच्छा रहती थी कि सारे विद्यार्थी पढ़ने में तेज बनें और अच्छी श्रेणियों में पास हों।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सार्वदेशिक, वेदांत तथा दर्शनशास्त्र की योग्यता, प्रतियोगिता में, जिस समय सर्वप्रथम आकर ईश्वरचंद्र ने सैकड़ों रुपये के नकद पारितोषिक प्राप्त किये और गद्य तथा पद्य रचना में सर्वश्रेष्ठता प्रमाणित की, उस समय ये भारत के महान् विद्वान् स्वीकार कर लिये गये और उस स्वीकृति के प्रकाशनार्थ उस समय के श्रेष्ठतम विद्वानों ने एक सभा करके ईश्वरचंद्र का अभिनंदन किया और सर्वसम्मति से इन्हें विद्यासागर की उपाधि दी और तब से वे ईश्वरचंद्र विद्यासागर के नाम से प्रसिद्ध हुए। इस समय इनकी आयु उन्नीस-बीस साल से अधिक न थी।

संस्कृत कॉलेज की समग्र शिक्षा आत्मसात् कर लेने के बाद विद्यासागर ने विद्या प्रसार करने का निश्चय किया। उनका विश्वास था कि जब तक देश में शिक्षा का समुचित प्रसार न होगा, जनता के हृदय में ज्ञान की ज्योति नहीं जलेगी, तब तक समाज का समुचित सुधार न होगा और वह विविध रूढ़ियों में ग्रस्त निकृष्ट जीवन जीता रहेगा। अपने इस सदुद्देश्य का सूत्रपात करने के लिए अपने गाँव वीरसिंह में गये तब तक इधर उसी फोर्ट विलियम कॉलेज में प्रधान पंडित का पद रिक्त हो गया। कॉलेज के प्रिंसिपल श्री मार्शेल साहब बड़े योग्य और मनुष्यों के पारखी व्यक्ति थे। वे जिस समय संस्कृत कॉलेज में प्रिंसिपल थे उसी समय से ईश्वरचंद्र विद्यासागर के गुणों को जानते थे और समझते थे कि विद्यासागर शिक्षा क्षेत्र के लिए बहुत ही उपयुक्त व्यक्ति सिद्ध होंगे। अतः उन्होंने स्थान रिक्त होते ही उनको गाँव से बुलावा भेजा और प्रधान पंडित का पद ग्रहण कर लेने के लिए विशेषतौर पर अनुरोध किया।

विद्यासागर ने अनिच्छा प्रकट करते हुए कहा कि, मैं नौकरी करके उपार्जित विद्या का उपयोग सीमित नहीं करना चाहता हूँ। मैं स्वतंत्र रहकर समाज में शिक्षा प्रसार की सेवा करना चाहता हूँ। देश में अविद्या का अंधकार बुरी तरह फैला हुआ है। उसको दूर करने में यथा संभव प्रयत्न करना मेरा राष्ट्रीय कर्तव्य है। केवल अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए अपनी योग्यता का उपयोग करना बहुत बड़ा स्वार्थ है। इसी स्वार्थ के दशीभूत होकर देश के शिक्षित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोग समाज का विचार छोड़कर सरकारी सेवाओं में जाकर स्थगित हो जाते हैं, जबकि आवश्यकता इस बात की है कि जब तक समाज में शिक्षा का प्रकाश नहीं फैल जाता, तब तक वे अपना समय शिक्षा प्रसार के पुण्य कार्य में लगायें। शिक्षित व्यक्ति ही तो समाज में शिक्षा का प्रसार कर सकते हैं, मैं अपनी सेवाएँ समाज को देकर एक उदाहरण उपस्थित करूँगा, जिससे कि दूसरे लोगों को प्रेरणा मिले और वे समाज से अविद्या का अंधकार दूर करने में जनता की सहायता करें।

पं० ईश्वरचंद्र विद्यासागर के सुंदर विचार सुनकर श्री मार्शेल साहब बहुत प्रभावित हुए और उनकी दृष्टि में विद्यासागर का आदर और बढ़ गया। उन्होंने उनके विचारों की सराहना करते हुए कहा—"जहाँ तक समाज में विद्या प्रसार का प्रश्न है, स्कूलों तथा कॉलेजों के माध्यम से वही तो होता है। यदि शिक्षा के इन माध्यमों में कोई कमी या संशोधन की आवश्यकता दिखलाई देती हो तो उसमें रहकर उनका सुधार किया जा सकता है। बाहर रहकर स्वतंत्र रूप से शिक्षा का प्रसार करना आप जितना आवश्यक समझते हैं उतना ही आवश्यक है, शिक्षा-संस्थाओं को अच्छे तथा सुयोग्य शिक्षक मिलना। जिस समाज की संस्थायें सुयोग्य शिक्षकों से वंचित रहती हैं, वहाँ शिक्षा का कार्य होते दिखलाई देने पर भी वास्तविक शिक्षा का प्रसार नहीं हो पाता। बाहर रहकर तो आप अकेले ही शिक्षा का प्रसार करेंगे, किंतु कॉलेज में अपनी योग्यता के आधार पर ऐसे बहुत से व्यक्ति निर्माण कर सकते हैं, जो समाज में आपके सदुद्देश्य को आगे बढ़ा सकें। इसलिए मेरा सच्चा परामर्श है कि आप कॉलेज के प्रधान पंडित का पद ग्रहण कर लें और उसी माध्यम से अपने उद्देश्य के लिए प्रयत्न करें। मेरा विचार है कि इस प्रकार आप सरकार से भी बहुत कुछ सहयोग तथा सहायता प्राप्त कर सकते हैं, जो कि आपके प्रयत्नों में बड़ी सीमा तक उपयोगी सिद्ध होगी।"

श्री विद्यासागर को प्रिंसिपल मार्शेल के परामर्श में सार तथा सच्चाई मालूम हुई और उन्होंने कॉलेज में प्रधान पंडित का पद स्वीकार कर लिया। सबसे पहला सुधार जो विद्यासागर ने कॉलेज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में किया वह यह है कि उसमें सभी जातियों के लड़कों को शिक्षा की सुविधा मिल गई। पहले कॉलेज में किन्हीं विशिष्ट जातियों के लड़कों को ही प्रवेश देने का नियम था। इससे कुछ उच्च जातियों के लड़के ही शिक्षा का लाभ उठा पाते थे। बाकी अन्य जातियों के लड़के अशिक्षित ही रह जाया करते थे। विद्यासागर ने देखा कि इस हानिकारक प्रतिबंध से पूरे समाज में शिक्षा का प्रसार नहीं हो पा रहा है। केवल कुछ विशिष्ट वर्ग के लड़के ही थोड़ी-बहुत शिक्षा पा पाते हैं। इस प्रकार के प्रतिबंध से तो न जाने अन्य जातियों के कितने ही प्रतिभाशाली बच्चे अशिक्षित ही रह जाते हैं। उनकी प्रतिभा का न तो विकास हो पाता है और न उसका उपयोग ही समाज के हित में है। विद्यासागर ने अनुभव किया कि इस कॉलेज प्रवेश में इस जातीय तथा वर्गीय प्रतिबंध का उन्मूलन होना बहुत आवश्यक है। यह एक बड़ी क्षति है और इसके कारण देश की स्वतंत्रता—प्रगति में बाधा पड़ती है। जब सभी वर्गों और सभी जातियों के बच्चों को समान रूप से पढ़ने का अवसर मिलेगा, तभी देश में शिक्षा प्रसार का उद्देश्य सिद्ध हो सकेगा। केवल किन्हीं एक-दो वर्ग के पढ़ें और अन्य सारे वर्गों के निरक्षर रहने से किसी समाज को शिक्षित नहीं माना जा सकता। देश और समाज का समुचित विकास तभी हो सकता है, जब उसके सभी वर्गों और सभी जातियों के लोगों में शिक्षा का समुचित प्रसार हो।

विद्यासागर जी ने कॉलेज से उक्त प्रतिबंध हटवाने का प्रयत्न प्रारंभ कर दिया। उन्होंने सबसे पहले कॉलेज के शिक्षकों तथा प्रधानों को अपने अभिमत से सहमत किया और उनका बल लेकर सरकार से लिखा-पढ़ी शुरू की। सरकार के सहमत हो जाने पर भी जनमत का एक बहुत बड़ा प्रश्न सामने आ गया। श्री विद्यासागर के इस सुधार का उच्च वर्गीय जनता में बड़ा विकट विरोध होना प्रारंभ हो गया, किंतु दृढ़ निश्चयी विद्यासागर इससे विचलित न हुए। वे जानते थे कि सदियों से रूढ़िग्रस्त समाज का यह विरोध स्वाभाविक ही है। साथ ही उन्हें यह भी विश्वास था कि जब कोई प्रयत्न सच्चे मन से किया जाता है तो वह एक न एक दिन सफल अवश्य होता है। जनसमूह का पूर्वाग्रह उसे विरोध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने के लिये प्रेरित करता है, पर जब सतत् प्रयत्नों द्वारा उन्हें सत्य का प्रकाश मिलने लगता है तब वह धीरे-धीरे सहमत होने लगता है। उनके सामने राजा राममोहन राय जैसे पूर्व सुधारकों के उदाहरण मौजूद थे। इसलिए उन्होंने विरोध की कोई चिंता न की और अपने पुण्य प्रयत्न में उत्साहपूर्वक लगे रहे। इस कार्य के लिए विद्यासागर ने समाज के प्रबुद्ध वर्ग पर सबसे पहले अपने प्रयत्न प्रारंभ किए और जल्दी ही उसे प्रभावित कर सहमत कर लिया। प्रबुद्ध वर्ग के सहमत होते ही जन समुदाय उसका अनुकरण करता हुआ स्वयं सहमत होने लगा और जल्दी ही शिक्षा संस्थाओं से उक्त प्रतिबंध हटा दिया गया।

इस सुधार की सफलता के श्रेय स्वरूप समाज में श्री विद्यासागर का न केवल आदर ही बढ़ गया, बल्कि वे महान् समाज सुधारकों की श्रेणी में गिने जाने लगे। सरकार में उनका प्रभाव बढ़ गया और शिक्षा-प्रसार के क्षेत्र में उनके परामर्शों को मान्यता एवं महत्त्व दिया जाने लगा। इतना ही नहीं, इस सेवा कार्य के मूल्यांकन रूप विद्यासागर का मासिक वेतन डेढ़-सौ रुपये से बढ़ाकर तीन सौ रुपये कर दिया गया।

इन्हीं दिनों इंगलैंड से जो अंग्रेज भारत में सिविल सर्विस के लिए भेजे जाते थे, उन्हें हिंदी पढ़नी और उसकी परीक्षा पास करनी पड़ती थी और तभी वे उस पद पर नियुक्ति के योग्य समझे जाते थे। जो अंग्रेज इस परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाते थे, उन्हें वापस इंगलैंड जाना पड़ता था। इन परीक्षाओं के परीक्षक श्री विद्यासागर ही हुआ करते थे। वे हर अंग्रेज की परीक्षा सच्चाई के साथ लिया करते थे।

एक बार उनके कॉलेज में प्रिंसिपल श्री मार्शेल साहब ने अंग्रेज परीक्षार्थियों के साथ रियायत बरतने की सिफारिश की। उनका विचार था कि मेरे अधीन काम करने के कारण विद्यासागर उनकी यह सिफारिश अवश्य मान लेंगे और अंग्रेज परीक्षार्थियों के साथ रियायत कर उन्हें पास कर दिया करेंगे, किंतु सिद्धांतनिष्ठ विद्यासागर ने उसके लिये स्पष्ट इनकार करते हुए कहा—"जब अयोग्य परीक्षार्थियों को उत्तीर्ण ही किया जाना है तब इस प्रकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परीक्षा का प्रतिबंध लगाना ही बेकार है। सरकार को इन्हें सीधे-सीधे नियुक्त कर देना चाहिए। मेरे रियायत बरतने से अयोग्य लोग प्रशासन में भर जायेंगे, जिससे न केवल राज्य व्यवस्था में ही गड़बड़ी फैलेगी प्रत्युत जनता को भी उसका कष्ट भोगना पड़ेगा। मैं इस प्रकार का अन्याय नहीं कर सकता। कर्तव्य की चोरी करने वाले को मैं बहुत बड़ा पापी समझता हूँ। यह तभी हो सकता है जब आप मेरे स्थान पर किसी सिद्धांतहीन व्यक्ति को नियुक्त करा दें। जब तक मैं इस उत्तरदायित्व में हूँ तब तक अन्याय संभव नहीं।" मार्शेल साहब विद्यासागर का खरा और स्पष्ट उत्तर सुनकर चुप हो गये और फिर कभी भी उनके सामने इस प्रकार का कोई प्रस्ताव नहीं रक्खा। निर्भीक उत्तरदायी व्यक्ति किसी भी स्थिति की शंका से अपने कर्तव्य की विडंबना नहीं करते। ऐसे ही आदरणीय एवं दृढ़मनः व्यक्तियों से समाज की उन्नति तथा मनुष्यता का मूल्यवर्धन होता है।

संस्कृत का अखंड ज्ञान होते हुए भी श्री विद्यासागर की अंग्रेजी के काम में कुछ अड़चन हुआ करती थी। इसके लिए उन्हें जब तब दूसरों का सहारा लेना पड़ता था। विद्यासागर को यह परावलंबन अच्छा न लगा और उन्होंने अंग्रेजी पढ़ने का निश्चय कर लिया। अंग्रेजी पढ़ने के लिए उन्होंने श्री राज नारायण गुप्त नामक एक अंग्रेजी के जानकार को अध्यापक नियुक्त किया और कुछ ही समय में अंग्रेजी पर अधिकार कर लिया। इसके साथ ही वे बहुत-से लोगों को निःशुल्क संस्कृत की शिक्षा दिया करते थे। उनके संस्कृत शिष्यों में से एक श्री राजकृष्ण बाबू भी थे। वे एक वृद्ध व्यक्ति थे। उनको संस्कृत के प्राचीन व्याकरणों से पढ़ने में कठिनाई होती थी। विद्यासागर ने सोचा कि जिस प्रकार संस्कृत के प्राचीन व्याकरण इनको कठिन पड़ते हैं, उसी प्रकार किसी को भी कठिन पड़ सकते हैं और संभव है कि व्याकरण की जटिलता के कारण लोग संस्कृत पढ़ने की ओर अधिक उन्मुख नहीं होते हैं। अस्तु, उन्होंने संस्कृत के एक सरल तथा नवीन शैली के व्याकरण की आवश्यकता अनुभव की और उसे तैयार करने में लग गए। इसके लिए उन्होंने संस्कृत के सारे उपलब्ध व्याकरणों का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्ययन-मनन किया। पाश्चात्यों द्वारा अंग्रेजी में लिखे संस्कृत व्याकरणों को भी पढ़ा। इस प्रकार एक वर्ष के घोर परिश्रम के बाद उन्होंने 'उपक्रमणिका' नाम से संस्कृत का एक सरल सुबोध तथा नवीन शैली का एक व्याकरण लिख डाला। विद्यासागर द्वारा लिखा व्याकरण इतना लोकप्रिय हुआ कि वह संस्कृत के पाठ्यक्रम में स्वीकृत किया गया। उनके इन कामों ने न जाने कितने लोगों को संस्कृत पढ़ने के लिए प्रवृत्त कर दिया। आज भी बंगाल में विद्यासागर निर्मित 'उपक्रमणिका' लोगों को सरलतापूर्वक संस्कृत सीखने में सहायक बनी हुई है।

जिन दिनों श्री विद्यासागर की ये योग्यतापूर्ण सेवाएँ चल रही थीं, उन्हीं दिनों नर्ये गवर्नर जनरल लार्ड हार्डिंग कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज का निरीक्षण करने आये। सबके साथ विद्यासागर का भी परिचय उनसे कराया गया। थोड़ी देर की बातचीत से ही लार्ड हार्डिंग पर उनकी योग्यता प्रकट हो गई और उन्होंने समझ लिया कि वे बंगाल के एक विशेष व्यक्तित्व तथा समाज सेवा के सक्रिय कार्यकर्ता के गुण रखने वाले प्रमुख विद्वान् हैं। जहाँ अन्य सारे लोग गवर्नर जनरल की जी हुजूरी में लगे हाँ में हाँ मिला रहे थे, वहाँ विद्यासागर ने अपनी निर्भीकता का परिचय देते हुए सरकार की इस नीति की कड़ी आलोचना की कि संस्कृत कॉलेज के पढ़े विद्यार्थियों को सरकार की ओर से कोई महत्त्व नहीं दिया जाता। इसलिए भारतीय लोग अपनी प्राचीन तथा महान् भाषा की ओर से उदासीन होते जा रहे हैं, जिससे कि उनकी सभ्यता तथा संस्कृति पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। सरकार को संस्कृत पढ़े व्यक्तियों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए और उन्हें वही मान्यता प्रदान की जानी चाहिए, जो मान्यता अन्य कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों को प्रदान की जाती है।

लार्ड हार्डिंग विद्यासागर की यह निर्भीक तथा निश्छल देशभक्ति देखकर बहुत प्रभावित हुए और उन्हें कोई ऐसी योजना देने के लिए कहा, जिससे संस्कृत कॉलेज के शिक्षा प्राप्त तरुणों का मूल्यांकन किया जा सके। विद्यासागर तुरंत इस सत्कार्य में संलग्न हो गये और पाँच-छह महीने के घोर परिश्रम के बाद

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक सौ एक बंगला स्कूल खोले जाने की सांगोपांग योजना लार्ड हार्डिंग को दी, जिसमें यह नियम रखा कि इन नवारंभ स्कूलों में संस्कृत कॉलेज के पढ़े व्यक्ति ही शिक्षक के स्थानों पर नियुक्त किये जायें। योजना की पूर्णता तथा व्यावहारिकता देखकर लार्ड हार्डिंग इतने प्रभावित तथा प्रसन्न हुए कि उन्होंने बिना किसी संशोधन के उनकी उस योजना को ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया और उसको कार्यान्वित करने का भार विद्यासागर को ही सौंप दिया।

श्री विद्यासागर ने वह महान् तथा महत्त्वपूर्ण सेवा का भार खुशी-खुशी अपने कंधों पर लिया और उसे पूरा करने में तत्परतापूर्वक लग गये। अनेक लोगों ने लार्ड हार्डिंग की ओर से उतना बड़ा कार्यभार अपने कंधों पर ले लेने पर भय दिखाते हुए कहा—"विद्यासागर जी आप कॉलेज में पढ़ाते हुए भी इतना बड़ा काम किस प्रकार पूरा कर सकते हैं ? आपको यह काम अपने हाथों में नहीं लेना चाहिए था। यदि आप इसे सफलतापूर्वक पूरा न कर सके अथवा कहीं भूल अथवा त्रुटि हो गई तो लाट साहब का कोपभाजन तो बनना ही पड़ेगा, साथ ही लोकापवाद का भी भागी बनना पड़ेगा। आपको यह उत्तरदायित्व लेने से पूर्व इन सब बातों पर अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए था। अच्छा होता कि आप सब झंझट में पड़ने के बजाय लाट साहब की प्रसन्नता का लाभ कोई ऊँचा पद पाने में उठाते। जीवन में तरक्की करने का एक बहुत बड़ा अवसर आपने अपने हाथ से खो दिया।"

श्री विद्यासागर ने उनकी बातें बड़ी सहिष्णुता से सुनी और कहा—"इस प्रकार के असहाय तथा भय से अभिभूत लोग समाज की कोई बड़ी सेवा तो दूर, एक छोटी-सी सेवा भी नहीं कर सकते। संसार में एक से एक महान् कार्य हुए हैं और हो रहे हैं—उन सबको मनुष्य ही तो करते हैं। जब कोई अन्य व्यक्ति किसी महान् उत्तरदायित्व को पूरा कर सकता है, तब मैं क्यों नहीं कर सकता ? यह बात मेरी समझ में किसी प्रकार भी नहीं आती। कोई महान् कार्य भार वहन करने के लिए जिस परिश्रम, संलग्नता तथा आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है, उसकी कमी को मैं अपने में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुभव नहीं करता। मनुष्य में निहित अव्यय शक्तियों के प्रति मेरी पूरी निष्ठा तथा विश्वास है और अपने में इस बात का पूरा साहस पा रहा हूँ कि मैं अपनी दी हुई एक सौ एक स्कूल की योजना को सफलतापूर्वक पूरा कर सकूँगा ? परिणाम तथा सत्य से पराङ्मुख रहने वाले व्यक्ति ही किसी उत्तरदायित्व से भयभीत होते हैं, मुझे उससे भयभीत होने की किंचिन्मात्र भी आवश्यकता नहीं है। सच्चाई तथा निःस्वार्थ भाव से 'जब मैं अपना कर्तव्यपालन करूँगा तब कोई कारण नहीं कि मैं उसमें सफल न होऊँ। मैं अपने इस जन सेवा के कार्य में अवश्य सफल होऊँगा इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है।"

"लाट साहब की प्रसन्नता का लाभ किसी ऊँचे पद के रूप में उठाने की बात कहने से पूर्व आपको उस अदना से अंग्रेज सर टामस रो को याद कर लेना चाहिए था, जिससे भारत सम्राट् जहाँगीर की प्रसन्नता का लाभ अपने स्वार्थ के लिए न उठाकर उसका उपयोग अपने देश तथा राष्ट्र के हित में किया था। जब जहाँगीर ने उससे मन चाहा पुरस्कार माँगने को कहा था, तब वह करोड़ों का धन, बड़ी-सी जागीर, दरबार की मुशाहवी अथवा सेना में पंचहजारी आदि का कोई भी बड़े से बड़ा पद माँग सकता था, किंतु उस स्वनाम धन्य सर टामस रो ने देशहित के सम्मुख अपने स्वार्थ को तिनके के समान तुच्छ समझा और अपनी जाति के लिए भारत में व्यापार की सुविधा तथा चुंगी की माफी माँगी। उस निर्लोभ राष्ट्र भक्त का वह त्याग ही आज भारत में अंग्रेजी राज्य के रूप में फलीभूत हुआ है। ऐसे निःस्वार्थ तथा निर्लोभ समाज हितैषी जिस देश में होते रहेंगे; वह देश, वह राष्ट्र, वह समाज इसी प्रकार उन्नति के शिखर पर आसीन रहेगा।"

"सर टामस रो अपने लिए अतुल वैभव माँगकर भी एक दिन साधारण जनों की भाँति सब कुछ छोड़कर मिट्टी में मिल जाता और त्याग के कारण वह अपने जिस यश को छोड़कर अमर हुआ है, वह न हो पाता। मनुष्य की महानता इसी में है कि वह अपने स्वार्थ की तुलना में सामाजिक हित को आगे रखे और अपनी योग्यता, प्रभाव तथा अवसरों को उसी की उन्नति तथा विकास में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यापन करें। मैं उस लाट साहब की प्रसन्नता को किसी उच्च पद के रूप में मुद्रित कर सकता था, किंतु आज समाज के हित में उसका उपयोग कर जो प्रसन्नता तथा सुख मुझे प्राप्त हो रहा है, वह स्वार्थपूर्ण किसी भी पद में प्राप्त न होता।" लोगों ने विद्यासागर के विचार सुने और उनकी महानता को समझा, साथ ही विद्यासागर ने सबसे प्रार्थना की कि उक्त कार्य में उनकी जो सेवाएँ काम आ सकें, उन्हें लेने में जरा भी संकोच न करें।

स्कूलों की स्थापना के लिए विद्यासागर ने सारे बंगाल का दौरा किया और ऐसे स्थानों की खोज की, जहाँ उनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। ऐसे उपयुक्त स्थान उन्होंने देहातों, कस्बों तथा शहरों के उन भागों में निश्चित किये, जहाँ निरक्षरता का एकछत्र राज्य था और जहाँ पिछड़े वर्ग के लोग रहते थे। सारी व्यवस्था बनाकर विद्यासागर ने एक सौ एक स्कूलों की स्थापना का काम पूरा कर दिया और उनमें ऐसे नियम भी लागू कराये, जिससे गरीब तथा पिछड़े हुए वर्ग के विद्यार्थियों को अधिक से अधिक सुविधा मिल सके। शिक्षा शुल्क में रियायत तथा छात्रवृत्तियों की भी व्यवस्था उन्होंने उन स्कूलों में करवाई। श्री विद्यासागर के इस प्रयास से बंगाल में स्थान-स्थान पर ज्ञान के दीपक जल उठे। इन स्कूलों की स्थापना का एक उद्देश्य यह था कि संस्कृत कॉलेज के पढ़े हुए विद्यार्थियों को पढ़ाने का अवसर मिले और लोगों का ध्यान संस्कृत पढ़ने की ओर जाये।

इन नव स्थापित स्कूलों में संस्कृत कॉलेज की परीक्षाएँ पास किये हुए व्यक्तियों को प्राथमिकता दिये जाने का नियम अनिवार्य करके उसके निर्वाचन तथा नियुक्ति का अधिकार भी विद्यासागर को ही दे दिया गया। यह एक महान् अधिकार था, किंतु विद्यासागर ने उसका उपयोग कर्तव्य समझकर किया। उन्होंने कभी कोई ऐसा अवसर न आने दिया, जिससे उन पर अन्याय अथवा अनीति का लांछन आता। वे शिक्षक पद के लिए आए प्रत्याशियों की कठोर परिश्रम लेने के साथ उनके आचरण तथा अनुशासन का भी पता लगा लेते थे। योग्यता के साथ जिनमें उक्त दोनों गुणों का भी समावेश होता था, विद्यासागर उन्हीं प्रत्याशियों की नियुक्ति किया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करते थे। इस प्रकार योग्य तथा चरित्रवान् शिक्षकों के प्रभाव में सारे स्कूल दिन-दिन उन्नति तथा शाखा-प्रशाखाओं के रूप में विकसित होने लगे।

शिक्षा प्रसार के इस एक ही महान् कार्य ने पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर को न केवल बंगाल में बल्कि संपूर्ण भारत में विख्यात कर दिया। उन नव-स्थापित एक सौ एक स्कूलों की देखभाल में विद्यासागर का अधिकांश समय लगने लगा और उन्होंने अनुभव किया कि कॉलेज के काम में उतना समय नहीं दे पाते, जितना कि देना चाहिए। वे कदापि भी पूरे समय में पूरा काम किये बिना वेतन न लेना चाहते थे और यह भी देख रहे थे कि कॉलेज के बंधन के कारण शिक्षा प्रसार के उन माध्यमों की सेवा में पर्याप्त समय न दे पाते हैं। इस प्रकार दो नावों की स्थिति से वे असुविधा अनुभव करने लगे और कोई एक कार्य सुचारु रूप से करने के लिए किसी एक कार्य को छोड़ देना आवश्यक समझने लगे। एक ओर स्वलाभ रहित समाज में शिक्षा प्रसार का व्यापक कार्य था और दूसरी ओर आजीविका सहित कॉलेज का सीमित अध्यापन। इनमें से एक क्षेत्र को चुनना था। तपे हुए वे त्यागी पुरुष विद्यासागर स्वार्थ तथा परमार्थ के महान् अंतर को जानते थे, इसलिए उन्हें निर्णय लेते जरा भी देर न लगी और उन्होंने स्वतंत्रतापूर्वक विद्या प्रसार का कार्य करने के लिए कॉलेज की सेवा से त्याग-पत्र दे दिया।

स्वसीमित लोगों ने विद्यासागर के इस त्याग को बुद्धिमत्ता की परिधि में अंकित नहीं किया और उनके पास जाकर समझाया कि आप इतनी अच्छी नौकरी से त्यागपत्र न दें और अपना हित देखते हुए जो भी जन-सेवा बन सके करें। इस प्रकार नौकरी छोड़ देने से जीविका की समस्या खड़ी हो जायेगी और तब उन्हें बड़ी कठिनाई होगी, किंतु दृढ़व्रती ईश्वरचंद्र किसी के परामर्श से सहमत न हो सके। उन्होंने कहा—"मैं समझता हूँ कि कॉलेज से नौकरी छोड़ देने पर उन्हें आर्थिक कठिनाई होगी, तब भी समाज सेवा का यह आया हुआ अवसर मैं नहीं छोड़ सकता। जीवन चलाने के लिए मैं कोई न कोई छोटा-मोटा काम कर लूँगा। मेरी आवश्यकताएँ सीमित तथा संतोष से नियंत्रित हैं। थोड़ी आय में भी मैं अपना काम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चलाऊँगा।" कॉलेज से मुक्त होकर विद्यासागर एकनिष्ठ शिक्षा प्रसार के काम में संलग्न हो गये।

विद्यासागर गाँव-गाँव घूमकर लोगों को नव-स्थापित स्कूलों की स्थापना के लिए प्रेरित करने लगे। साथ ही जहाँ-जहाँ स्कूलों की स्थापना अभी तक नहीं हो पाई थी, वहाँ लोगों को उसकी आवश्यकता समझाकर स्कूल स्थापित करने के लिए कहते थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने अनेक बच्चों की छोटी-छोटी पाठशालाएँ खोलीं, जिनमें वे स्वयं भी पढ़ाया करते थे और अपने अनेक मित्रों को पढ़ाने के लिए बुलाते थे। ऐसी बाल-पाठशालाएँ उन्होंने स्वयं अपने खर्च पर चलाईं और किसी लड़के से एक पैसा भी फीस का नहीं लिया।

जिस प्रकार अपने छात्र जीवन में विद्यासागर मिली हुई छात्रवृत्तियों तथा पुरस्कारों के धन से गरीबों तथा गरीब विद्यार्थियों की सहायता करते रहते थे, उसी प्रकार कॉलेज के सेवाकाल में भी अपना अधिकांश वेतन दूसरों की सहायता करने में ही खर्च करते थे। लोग इन दानशील महामानव के पास अब भी उसी तरह सहायता के लिए निःसंकोच आते रहते थे। उनके पास जब तक थोड़ा-बहुत भविष्य के लिए बचाया हुआ धन रहा, वह लोगों की सहायता करते रहे। किंतु जब इनके पास कुछ भी शेष न बचा तो वह इस सोच में पड़ गए कि अब आगे आवश्यकताग्रस्त लोगों की सहायता किस प्रकार से कर सकूँगा ? फिर भी इन्होंने परोपकार के लिए कुछ दिन ऋण का सहारा लिया, किंतु जब पानी सिर से ऊँचा होने लगा था, तो इन्होंने कुछ करने की सोची थी।

उसी समय संयोगवश संस्कृत कॉलेज में एक शिक्षक का स्थान रिक्त हुआ और कॉलेज के अधिकारियों ने उनसे उक्त पद सँभाल लेने का अनुरोध किया। विद्यासागर ने संस्कृत कॉलेज में काम कर लेने का विचार बनाया, तभी उनके एक मित्र तारानाथ तर्क वाचस्पति उसके पास आये और बोले—"भाई विद्यासागर जी, यदि आप थोड़ी-सी कोशिश कर दें तो मुझे संस्कृत कॉलेज में वह स्थान सरलता से मिल सकता है, जो अभी रिक्त हुआ है। इस प्रकार मेरी बेकारी दूर हो जायेगी और गुजर-बसर चलने लगेगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विद्यासागर को समझते देर न लगी कि उनके मित्र उसी पद के विषय में कह रहे हैं, जिस पर काम करने के लिए उन्होंने स्वयं निश्चय किया है। एक बार पुनः स्वार्थ एवं परमार्थ का साम्मुख्य हो गया, किंतु परमार्थ पक्ष का सैनिक स्वार्थ से पराभूत किस प्रकार हो सकता था ? हाथ की तंगी और सिर पर कर्ज का बोझ लिए हुए भी परोपकार-प्रवण ईश्वरचंद्र ने अपनी मुठ्ठी की जीविका श्री तारानाथ तर्क वाचस्पति को सौंप दी। कॉलेज के अधिकारियों ने उनकी इस उदार वृत्ति की पहले तो आलोचना की, किंतु बाद में उनका विचार सुनकर उनके प्रशंसक बन गये। श्री विद्यासागर ने कहा कि यह मेरा सहज स्वभाव है कि, मैं किसी को अभाव अथवा आवश्यकता में नहीं देख सकता हूँ, साथ ही परमार्थ के सम्मुख स्वार्थ को आगे नहीं रख पाता। ऐसे समय पर मुझे अपनी निजी आवश्यकताएँ विस्मरण हो जाती हैं और दूसरे की आवश्यकतायें मुझे अपनी आवश्यकताएँ अनुभव होने लगती हैं। अभाव अथवा आवश्यकता में रह लेना मेरा जन्म-जात अभ्यास है। इसमें मुझे जरा भी कष्ट नहीं होता, किंतु यह सोच सकना मेरे लिए सरल नहीं कि कोई दूसरा भी मेरी तरह ही कष्ट-सहिष्णु हो सकता है। किसी अच्छे काम के लिये कष्ट सहने में एक आध्यात्मिक आनंद है। किंतु यह अनुभव तभी होता है, जब मनुष्य की आत्मा में सच्ची संवेदना तथा निःस्वार्थ त्याग भावना हो। वह पद ले लेने से भाई तारानाथ को जितना सुख होगा, उससे कम सुख मुझे भी नहीं होगा। अपने स्वार्थ को तिलांजलि देकर किसी का सुख-साधन किया जा सके, इससे अधिक मानव-जीवन की सार्थकता और क्या हो सकती है ?

परोपकारी तथा पुण्य-प्रवण पुरुष के लिए एक के बाद दूसरा द्वार खुलता ही रहता है। कुछ समय बाद उस संस्कृत कॉलेज में मंत्री का एक पद-निर्माण किया गया, जिसको विद्यासागर को साग्रह सौंप दिया गया। इस पर श्री ईश्वरचंद्र की नियुक्ति एक-सौ पचास रुपये से की गई, किंतु शीघ्र ही परिश्रम तथा दक्षतापूर्वक कार्य करने से इनका वेतन तीन-सौ कर दिया गया और इसके बाद इन्हें विद्यालय निरीक्षक का उत्तरदायित्व देकर वेतन की दर पाँच सौ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रुपये माहवार कर दी गई। आर्थिक सुविधा होते ही श्री विद्यासागर का परोपकार पुनः तीव्रगति से चलने लगा। उनके अपने निजी खर्च उतने ही रहे, जितने कि बेकारी की दशा में थे। न तो उन्होंने अपने लिए कोई सुविधा में वृद्धि की, और न कोई आवश्यकता बढ़ाई। वही मोटे गाढ़े का अंगरखा, मारकीन की मजबूत धोती और पैर में एक साधारण-सी चप्पल !

सही बात तो यही थी कि उन्हें अपनी यह प्राचीन भारतीय पोशाक बहुत ही प्रिय तथा सुविधापूर्ण लगती थी और वे उसे पहने हुए स्वाभिमान का अनुभव करते थे। यहाँ तक कि जब तब उन्हें छोटे-बड़े दोनों लाटों से शिक्षा संबंधी विषयों तथा प्रसंगों पर परामर्श करने के लिए जाना पड़ता था, तब भी वे अपनी इसी भारतीय परंपरा के अनुसार वैशभूषा में जाते थे और जब उनसे साहबी नियम के अनुसार कोट पतलून में साहब से मिलने के लिए विवश किया गया, तो उन्होंने एक दिन कह दिया कि अब आपसे हमारी आखिरी मुलाकात है। कोट पतलून पहन सकना मेरे वश की बात नहीं है और बिना उसके आपसे मिल सकना अनियमित है। हो सकता है इस नियम का पालन न कर सकने के कारण मुझे सेवा से त्याग-पत्र देना पड़े। लाट साहब ने उनके स्वदेशाभिमान की गहराई को परखा और पहनावे के संबंध में उन्हें छूट दे दी।

विद्यालय निरीक्षक के पद का भी उन्होंने उपयोग शिक्षा प्रसार में ही किया। बालकों की शिक्षा के लिए तो उस समय तक बहुत-से स्कूल खुल चुके थे, किंतु बालिकाओं की शिक्षा का सर्वथा अभाव था। अस्तु, इस बार उन्होंने बालिकाओं की शिक्षा के लिए प्रयत्न प्रारंभ किया। विद्यासागर ने देश में स्त्री शिक्षा की कमी दूर करने के लिए सरकार से लिखा-पढ़ी की और लार्ड हार्डिले को प्रभाव में लाकर पचास बालिका विद्यालय खोले जाने की स्वीकृति मँगवा ली और तुरंत ही उपयुक्त स्थानों पर उनका सूत्रपात कर दिया और उनके विकास में तन-मन से जुट गये। शिक्षा विभाग के डायरेक्टर यंग साहब को विद्यासागर का यह प्रभाव तथा देश-सेवा की तत्परता सहन न हुई। उन्होंने बालिका विद्यालयों की योजना स्थगित करने का आदेश निकाल दिया, किंतु विद्यासागर ने उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस सृजनविरोधी आदेश का घोर विरोध किया। फिर भी डायरेक्टर यंग विद्यालय तो बंद न करा सका। हाँ, सरकारी सहायता अवश्य रुकवा दी, किंतु संकल्पशील विद्यासागर ने इसकी जरा भी परवाह न की और सारे विद्यालयों को अपने खर्चे पर चलाने के साथ धनीमानी व्यक्तियों को उनकी सहायता करने के लिए सहमत करने लगे। इस प्रकार बालिका विद्यालयों का काम अच्छी तरह से चल निकला। यंग को उनकी इस सफलता से और भी ईर्ष्या होने लगी और वह विद्यासागर के सन्मार्ग में तरह-तरह से बाधक बनने लगा, यहाँ तक उसने उनके हर काम का विरोध करना शुरू कर दिया।

श्री विद्यासागर ने तनाव की उस स्थिति को ठीक न समझा और पद से त्याग-पत्र दे दिया। अपने त्याग-पत्र में अपने जीवन-उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा—"मेरे जीवन के अंतिम दिन अपने देश के स्त्री-पुरुषों के ज्ञान की उन्नति करने और साधारण शिक्षा-प्रसार में लगेंगे तथा इस व्रत का अंत चिता की भस्म से होगा।" व्रतवंत विद्यासागर ने अपने इस वचन को शिक्षा प्रसार में अपना सारा जीवन लगाकर पूरा किया।

पं० ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने अब जनता को अपने साथ में लेकर के बालिका विद्यालयों का काम चलाने लगे। उन्होंने अपने गाँव वीरसिंह में अपनी माताजी के नाम पर एक बालिका विद्यालय प्रारंभ किया और उसको अपने पास से सारा खर्चा देकर चलाने का निश्चय किया, किंतु उसके चलने में फिर भी कठिनाई आ खड़ी हुई। लोग उस समय बंगाल में शिक्षा को अनुचित काम समझते थे इसीलिए विद्यालय में अपनी लड़कियों को पढ़ने के लिए नहीं भेजते थे। विद्यासागर ने सबसे पहले अपने घर की बालिकाओं को विद्यालय में पढ़ने को बिठाया और लोगों को स्त्री-शिक्षा की आवश्यकता समझाई। इस प्रकार निरंतर प्रचार करते रहने के बाद में गाँव का बालिका विद्यालय भी चलाने में सफल हो गये। धीरे-धीरे वह विद्यालय मिडिल स्कूल होकर हाईस्कूल बन गया। विद्यालय के साथ ही विद्यासागर ने गाँव में एक चिकित्सालय की भी स्थापना की और उसे भी अपने खर्चे पर ही चलाते रहे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनंतर उन्होंने गवर्नर की सभा के एक सदस्य श्री वेथून साहब को अपने पक्ष में लेकर स्त्री-शिक्षा का अभियान तीव्रगति से चलाना प्रारंभ किया। विद्यासागर ने वेथून साहब के सहयोग से कलकत्ता तथा कलकत्ते के बाहर गाँवों में अनेक बालिका विद्यालय खोले, और लेडी केनिंग को प्रभावित कर उनकी सहायता कराई। बाद में जब वे शिक्षा-प्रसार के क्षेत्र से हटकर समाज-सुधार के अन्य क्षेत्रों में उतरे, तो स्थापित किए हुए कन्या विद्यालयों की अभिभाविका लार्ड केनिंग की पत्नी लेडी केनिंग को बनाकर उनकी प्रगति तथा अस्तित्व सुरक्षित कर दिया। इस प्रकार महान् कठिनाइयों के बीच बंगाल में शिक्षा तथा विशेषतया स्त्री-शिक्षा का प्रसार करने के लिए बंगाल ही नहीं सारा देश पं० ईश्वरचंद्र विद्यासागर का सदा कृतज्ञ बना रहेगा।

उन दिनों बंगाल में दो अभिशाप भयानक रूप से फैले हुए थे। एक वृद्ध-विवाह और दूसरा बहु-विवाह प्रथा। इन दोनों कुप्रथाओं के कारण स्त्रियों का जीवन साक्षात् नरक के समान बना हुआ था। लोग कुलीनता के बल पर सत्तर-सत्तर, अस्सी-अस्सी वर्ष की आयु में भी कम आयु की लड़कियों से विवाह कर लेते थे और एक-दो साल के बाद उनको आजीवन वैधव्य का दुःख भोगने के लिए छोड़कर काल के गाल में चले जाते थे। बहु-विवाह करने वाले एक व्यक्ति की मृत्यु से दस-दस, बीस-बीस नौजवान नारियाँ एक साथ विधवा हो जाती थीं। इन कुप्रथाओं के फलस्वरूप बंगाल प्रौढ़, तरुण तथा बाल-विधवाओं से भरा पड़ा था। इसके साथ ही हठात् विधवा बनाई गई निरपराध बालिकाओं के साथ जो अत्याचार किया जाता था, उन्हें जिस प्रकार उत्पीड़ित, तिरस्कृत एवं बहिष्कृत किया जाता था, उसका यदि रोमांचकारी वर्णन किया जाए तो अलग से एक बड़ा ग्रंथ बन जाये। उसका सर मुड़ाकर दो गाढ़े की मोटी धोतियाँ देकर चांडाल की भाँति घर के हर प्रसंग से अलग कर दिया जाता था। त्यौहारों, विवाहों तथा पूजा-अनुष्ठानों में उनकी छाया से भी बचाव किया जाता था। सुहागिनें उनका मुख देखना और उनके पास बैठना पाप समझती थीं। किसी पर्व-त्यौहार के अवसर पर शुभारंभ करते समय विधवा का दर्शन अशुभ माना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाता था। उनसे घर की सारी सेवा कराई जाती थी और घर की बची-खुची जूठन खाने को दे दी जाती थी। बहुत बार तो लोग विधवाओं को किसी तीर्थ स्थान पर ले जाकर छोड़ देते थे, जहाँ उनको अपना पेट पालकर जीने के लिए भीख माँगने के सिवाय कोई चारा न रह जाता था। बहुत-सी बाल तथा तरुण विधवाएँ गुंडों, बदमाशों तथा वेश्याओं के हाथों में पड़कर उनकी आय का साधन बनती थी। बहुत-से क्रूर संबंधी उन अबोध तथा निर्दोष अबलाओं को तीर्थ स्नान के बहाने गंगा अथवा यमुना में ढकेल-कर डुबा देते थे। उस समय पूरा बंगाल इस प्रकार की उन बाल-विधवाओं के मौन हाहाकार से गूँज रहा था, किंतु रूढ़िग्रस्त समाज इस ओर जरा भी ध्यान देने को तैयार न होता था। जो कुछ जैसा चला आ रहा था, वह कुछ और विकृत होकर चलता चला जा रहा था।

दयालु हृदय विद्यासागर ने समाज के इस अभिशाप को वेदना के साथ देखा और उसकी हानियों का अनुभव किया। शिक्षा प्रसार के साथ उन्होंने विधवाओं की दशा सुधारने का निश्चय कर लिया था। किंतु इस संबंध की एक बड़ी ही मार्मिक घटना ने जल्दी ही विद्यासागर को विधवाओं के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित कर दिया।

एक वृद्ध विद्वान् शंभुचंद्र वाचस्पति ने ईश्वरचंद्र को वेदांत की शिक्षा दी थी। ईश्वरचंद्र उनका बड़ा आदर तथा सम्मान किया करते थे। वाचस्पति जी भी उन्हें अपने पुत्र के समान मानते थे और उन पर बड़ा प्रेम रखते थे। विद्यासागर के यह वेदांत गुरु शंभुचंद्र संसार में अकेले थे। उनकी पत्नी को मरे एक जमाना हो चुका था, साथ ही अब उनकी भी आयु पूरी हो आई थी। वृद्धता तथा एकाकीपन के कारण शंभुचंद्र को बड़ा कष्ट होता था। अब उनके हाथ-पैर काम करने लायक न रह गये थे। ऐसे लोगों ने, जिन्हें समाज का शत्रु ही कहना चाहिए, उन्हें विवाह कर लेने की राय दी। इस अनुचित राय से बूढ़े के पेट का पाप उभर आया और वह विवाह करने की सोचने लगा। शंभुचंद्र के इस दुर्विचार ने स्पष्ट कर दिया कि वह विद्वान् जरूर थे किंतु चरित्रबल का उनमें सर्वथा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभाव था। बुढ़ापे के कष्ट से बचने के लिए उस घोर स्वार्थी वृद्ध ने एक बालिका का जीवन नष्ट कर देने की दुरभिसंधि की ओर सोचना शुरू कर दिया। उसे इस पाप में परमात्मा का डर तो अवश्य न लगा, पर विद्यासागर की अनुमति के बिना वैसा करने का साहस नहीं हुआ। एक दिन विद्यासागर के आने पर वृद्ध वाचस्पति ने अपना कुविचार उनके सामने रखते हुए कहा—बेटा ईश्वरचंद्र, तुम मेरी दशा तो देख ही रहे हो। हाथ-पाँव काम नहीं देते। हर बात का कष्ट रहता है, यदि तुम्हारी राय हो तो मैं विवाह कर लूँ। बुढ़ापे में आराम हो जायेगा। उस कब्र में पैर लटकाये बैठे हुए बूढ़े के मुख से पुनः विवाह करने की बात सुनकर श्री विद्यासागर अवाक् रह गए। उनकी समझ में ही न आया कि आखिर इस वयोवृद्धता में वाचस्पति को ऐसा कुविचार किस प्रकार आया ?

उन्होंने बड़े खेद के साथ कहा—"मैं आपको पिता तुल्य मानता हूँ और आप पर अपार श्रद्धा रखता हूँ, तथापि इस पाप-कर्म के लिए आपको कदापि राय नहीं दे सकता। मेरा परामर्श ही नहीं विनम्र प्रार्थना है कि, आप अपने मस्तिष्क से किसी अबोध बालिका का जीवन नष्ट करने का विचार निकाल दीजिये। ऐसा असंगत विचार आप जैसे विद्वान् को शोभा नहीं देता।" किंतु बूढ़े वाचस्पति पर उस सत्परामर्श का कोई प्रभाव न पड़ा और वह अपने कष्टों का रोना रोता हुआ विद्यासागर को अपनी दुरभिसंधि में सहमत हो जाने के लिये विवश करता रहा। विद्यासागर ने जब भली प्रकार यह समझ लिया कि बुड्ढे पर तो बेहयाई सवार हो ही गयी और अब यह एक बालिका की भेंट लिये बिना मानेगा नहीं तो उन्होंने उन्हें अंतिम प्रणाम किया और यह कहकर उसके घर से चल दिये कि अब मैं आपके घर पर आज के उपरांत फिर कभी नहीं आऊँगा।

उस पापिष्ट विचार ने शंभुचंद्र की सारी सद्बुद्धि नष्ट कर दी थी। अतः कुलीनता के बल पर एक गरीब ब्राह्मण की सुंदर कन्या से विवाह कर लिया। बूढ़ा वाचस्पति एक दिन शपथ देकर विद्यासागर को अपने घर पत्नी के दर्शन कराने ले गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विद्यासागर हृदय पर पत्थर रखकर गये और मौत के साथ बँधी बेबस जिंदगी की तरह उस बाल-वधू को देखकर आहत हो गये। गुरु पत्नी के नाते उन्होंने उस बालिका के चरणों में दो रुपये रखे और उसके भविष्य की कल्पना से आँसू बहाकर रोने लगे। वाचस्पति ने उन्हें जलपान कराने का प्रयत्न किया। विद्यासागर यह कहकर रोते हुए घर से चले गये कि अब इस घर का पानी पीना भी मेरे लिए पाप है। कुछ ही दिन में वृद्ध वाचस्पति उस कली जैसी बालिका को बेमतलब वैधव्य का दोष लगाकर, संसार सागर में अकेला छोड़कर नरकगामी हुआ। विद्यासागर अपनी उस गुरु वधू के साथ जो कुछ उपकार कर सकते थे, वह किया और विधवोद्धार के अपने संकल्प में लग गए।

विधवाओं की दशा का सुधार करने के लिए उन्हें उस समय एक ही उपाय समझ में आया। वह था 'विधवा विवाह' का प्रचलन ! विद्यासागर इस बात से अचेत नहीं थे कि 'विधवा-विवाह' का नाम लेते ही समाज में विरोध का एक ज्वार उठ खड़ा होगा। उस आंदोलन को अधार्मिक बनाकर धर्म के ठेकेदार उन्हें धर्मद्रोही ठहराने का प्रयत्न करेंगे। चूँकि हिंदुओं में विवाह एक धर्मकृत्य माना जाता है, इसलिए विधवा विवाह धर्म-सम्मत सिद्ध करना नितांत आवश्यक था। इसकी तैयारी के लिए उन्होंने संपूर्ण धर्मशास्त्रों का गहन मंथन तथा मनन किया और पाया कि विधवा-विवाह सर्वथा धर्म सम्मत है। शास्त्रों में इसका कहीं विरोध तो नहीं है, बल्कि स्पष्ट आदेश दिया गया है। श्री विद्यासागर ने शास्त्रों के विधवा-विवाह समर्थक सार को एकत्र कर उस पर अपनी मौलिक विचारधारा की छाप देकर विधवा-विवाह के नाम पर एक बड़ा-सा ग्रंथ लिखा।

रूढ़िवादी समाज की प्रतिक्रिया का अनुमान लगाने के लिए सबसे प्रथम उन्होंने वह ग्रंथ अपने पुरातनपंथी पिता को दिखलाया। ग्रंथ को आद्योपांत पढ़कर ठाकुरदास का अज्ञान दूर हो गया और वे विद्यासागर के आंदोलन से सहमत हो गये। विद्यासागर को विश्वास हो गया कि उनका यह ग्रंथ पुरातनपंथियों का अज्ञान दूर करने में सफल होगा। अतः उन्होंने उसे प्रकाशित कराकर समाज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में प्रचारित कर दिया। साथ ही उसकी व्याख्या करने तथा अन्य प्रकार का आवश्यक प्रचार करने के लिये "वामा बोधनी" नाम की पत्रिका भी निकाली थी।

ग्रंथ की जो प्रारंभिक प्रतिक्रिया होनी चाहिए थी, वह पुरातनपंथियों पर हुई। चारों ओर से विद्यासागर पर आलोचना तथा अपशब्दों की बौछार होने लगी। धर्म के ठेकेदार बने बैठे अधर्म बुद्धि वाले लोग आ-आकर उनको शास्त्रार्थ के लिए घेरने और ललकारने लगे। बहुत-से कट्टर पंथियों ने तो उन्हें मार डालने तक की धमकी दी, किंतु सुधार संग्राम के आर्यवीर विद्यासागर जरा भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने 'वामा बोधनी' में सारे प्रश्नों का उत्तर दिया, लोगों के तर्क तथा निर्देशों का समाधान किया और झगड़े पर उतारू लोगों को अपने साहस तथा चरित्रबल से पराभूत कर दिया।

इस प्रकार एक लंबे समय तक उस सद्सुधार का विरोध तथा निंदा होती रही। किंतु फिर भी धीरे-धीरे आवेग तथा आवेश उतर जाने पर लोगों ने शांत चित्त, ठंडे मस्तिष्क तथा निष्पक्ष बुद्धि से विचार करने पर पाया कि विधवा-विवाह न केवल शास्त्र सम्मत ही है, बल्कि समाज की उन्नति तथा विकास के लिए वह एक अनिवार्य आवश्यकता है। विचारों में मोड़ आते ही, जिस प्रकार पहले विरोध की बाढ़ आई थी, अब उसके समर्थन का प्रवाह बह चला। सत्य की विजय हुई और लोग विधवा-विवाह से सहमत ही नहीं होने लगे, बल्कि विधवा-विवाह करने भी लगे। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने अनेक सुधार का व्यावहारिक दृष्टांत समाज के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए स्वयं अपने लड़के का विवाह एक विधवा से किया। साथ ही एक-दो नहीं सैकड़ों विधवा-विवाह अपने हाथों से कराये।

अनंतर उन्होंने इसे वैधानिक रूप दिलाने के लिए सरकार पर दबाव डालना शुरू किया। इसके लिए उन्होंने राज्य सभा में बिल पेश कराये, आंदोलन चलाये और जनमत का समर्थन सरकार के पास भिजवाया। इस प्रकार के प्रयत्नों द्वारा विद्यासागर ने सरकार को सहमत कर लिया। अंत में जुलाई सन् १८५६ में विधवा-विवाह को वैध माने जाने का कानून पास हो गया, जिससे न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

केवल विधवाओं के सुधार की संभावना ही स्थायी हो गई, बल्कि उनका उत्तराधिकार भी सुरक्षित हो गया।

विधवा-विवाह का आंदोलन किनारे तक पहुँचाकर विद्यासागर ने समाज की दूसरी बुराई बहु विवाह की ओर ध्यान दिया और उसे मिटाने के लिए तन-मन-धन से पूरी तरह लग गये। उन दिनों अपने को कुलीन कहने वाले लोग एक पत्नी के रहते हुए दूसरी पत्नी रख लेना ही बड़ी बात नहीं समझते थे, वरन् चार-चार, छह-छह विवाह भी कर लेते थे। उन दिनों बंगाल में जिसके जितने अधिक विवाह हो जाते थे, वह उतना ही अधिक कुलीन तथा बड़ा आदमी माना जाता था। कुलीनता की दंभ दूषित बुद्धि वाले लोग ढलती आयु में भी चार-छह, यहाँ तक दस-दस, बीस-बीस वधुएँ लाकर घर में बिठाल देते थे। एक ओर बूढ़ा बाप अनेक नवोढ़ा पत्नियाँ लाकर रख लेता था और उनकी घृणित जीवनयापन किया करता था। उसी घर में दूसरी ओर उनकी तरुण विधवा लड़की एक भिक्षुणी की भाँति यातना सहन करती हुई जीवन काटती रहती थी। समाज की यह दुर्बुद्धि देखकर विद्यासागर मन ही मन दुःखी होते और इस कलंकिनी बहु विवाह प्रथा को नष्ट करने के लिए उपाय सोचा करते थे।

सबसे पहले सरकार का ध्यान उन्होंने इस अन्याय की ओर आकर्षित करने के लिए बहु विवाहों का विवरण इकट्ठा करने के लिए बंगाल का दौरा किया और बहु-विवाह करने वालों के नाम, आयु तथा उनकी विवाहिताओं की संख्या इकट्ठी करनी शुरू की उनके विवरण के आधार पर एक विद्वान् ने अपनी पुस्तक में आँकड़े देते हुए लिखा है—

"यद्यपि बहु-विवाह प्रथा सारी हिंदू-जाति में फैली हुई है, पर इसका पूर्ण रूप आपको बंगाल में ही देखने को मिलेगा। हुगली जिले में एक-एक कुलीन ब्राह्मण के हिस्से में ग्यारह से अधिक स्त्रियों का औसत पड़ता है। इनमें सबसे अधिक विवाह करके अपनी कुलीनता की जिन्होंने रक्षा की थी, जब ५५ वर्ष के थे तब वे ७० विवाह कर चुके थे। शायद अपने शेष जीवन में ८० विवाह तक किए हों तो कुछ आश्चर्य नहीं। एक महाशय जिनकी उम्र ७८ वर्ष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की थी ११ स्त्रियों के मस्तक में सौभाग्य सिंदूर भर चुके थे। ऐसे ही एक व्यक्ति २० वर्ष की अवस्था में १६ स्त्रियों को अपना चुके थे। बैरी साल जिले में कलसकारी एक गाँव है। वहाँ पर एक ईश्वरचंद्र मुखोपाध्याय नाम के एक व्यक्ति निवास करते थे। जिस समय ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने बहु विवाह की सूचियाँ बनाई थीं, उस समय उनकी अवस्था ५५ वर्ष की थी और तब तक वे १०७ विवाह कर चुके थे। पश्चात्, मृत्यु के समय तक तो उन्होंने कितनी ही स्त्रियों को सौभाग्यवती बनाया होगा। यह तो दैव ही जानें।"

यह उस बहु-विवाह के विशाल विवरण में से दिये हुए कुछ आँकड़े हैं, जो ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने पूरे बंगाल में घूम-घूम करके तैयार किये थे। इस बहु-विवाह प्रथा से उत्पन्न होने वाली हानियों की ओर समाज का ध्यान आकर्षित करने के साथ ही उन्होंने कानूनी बल पाने के लिए सरकार में इसे अवैध घोषित किए जाने के लिए प्रार्थना-पत्र दिया। किंतु सती प्रथा तथा विधवा-विवाह संबंधी कानून बन चुकने के कारण सरकार ने इतनी जल्दी तीसरा बहु-विवाह संबंधी कानून बनाना उचित न समझा। उसे अपनी लौकिक अप्रियता का भय दीखने लगा। अतः विद्यासागर की तत्संबंधी प्रार्थना पत्र अस्वीकृत कर दिया गया। श्री ईश्वरचंद्र विद्यासागर को प्रार्थना-पत्र के अस्वीकृत हो जाने का दुःख तो जरूर हुआ, किंतु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और जनमत का बल लेकर स्वयं जाकर इंगलैंड में महारानी विक्टोरिया से मिलने पर बहु-विवाह की बुराइयाँ बतलाने का निश्चय किया, किंतु उनकी यह इच्छा उनके मन की मन में रह गई, क्योंकि २६ जुलाई १८६१ में अकस्मात् उनकी मृत्यु हो गई।

पं० ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने जीवन भर समाज के हित के लिए जो सेवाएँ तथा प्रयत्न किए और जो कष्ट उठाए, उसने उन्हें भारत के ही नहीं संसार के महापुरुषों की सूची में उल्लखित कर दिया। विद्यासागर जी न केवल विद्या के सागर थे, बल्कि महान् गुणों के भी आगार थे। एक विख्यात पुरुष होकर भी वे किस सीमा तक सरल तथा सभ्य पुरुष थे ? यह एक इसी घटना से विदित हो जाता है—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक बार एक युवक पंडित विद्यासागर से मिलने के लिए आने वाला था। वे उसे लेने के लिए स्टेशन पर पहुँचे। युवक अपनी छोटी-सी अटैची लेकर गाँव के स्टेशन पर उतरा और कुली-कुली चिल्लाने लगा। उस छोटे-से स्टेशन पर कुली कहाँ ? पंडित विद्यासागर उसकी आवाज सुनकर उसकी ओर बढ़ गये। युवक ने उन्हें कुली समझकर अटैची देते हुआ कहा—"मुझे पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर के घर पहुँचा दो।" विद्यासागर ने साधारण भाव से अटैची ले ली और उसको साथ लेकर चल दिये। घर जाकर उन्होंने अटैची रख दी और कहा—यही उन व्यक्ति का घर है, जिससे आप मिलने के लिए आए हैं। युवक कुछ पैसे निकालकर उन्हें देने लगा। इस पर विद्या सागर ने हँसते हुए कहा कि, "आप हमारे मेहमान हैं, आप से पैसे लेना हमारा धर्म नहीं है। मेरी मजदूरी यही है कि अपना काम आप करने का अभ्यास डालो।" युवक को जब पता चला कि यही विद्यासागर हैं तो वह उनके पैरों में पड़कर क्षमा माँगने लगा।

विद्यासागर ने न केवल तन ही, बल्कि अपना सब धन भी जन-सेवा में लगा दिया। उन्होंने विलायत में कष्ट उठाते हुए बंगाल के महाकवि श्री मधुसूदन दत्त को लगभग पाँच-छह हजार रुपया भेजकर दो बार सहायता की। इसी प्रकार एक गरीब ब्राह्मण का मकान नीलाम होने से बचाने के लिए स्वयं जाकर उसके नाम से चौबीस-सौ रुपये अदालत में जमा कर दिये। किंतु इतना बड़ा उपकार करने पर भी उन्होंने अपना नाम उस ब्राह्मण पर प्रकट नहीं किया। इतना ही नहीं, ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने न जाने कितने निर्धन विद्यार्थियों की अपने पास से सहायता देकर उच्च शिक्षा दिलाई और अनाथ विधवाओं तथा बालकों की सहायता की। उन्होंने जीवन में जो कुछ कमाया उसका बहुत कम भाग अपने खर्च में लगाकर शेष सारा धन परोपकार में ही लगा दिया। विद्यासागर ने न केवल रोगियों की सहायता के लिए औषधालय ही खोला था, बल्कि स्वयं गरीबों का उपचार अपने हाथ से किया करते थे। पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर कितने दयालु तथा गरीबों की सेवा करने वाले थे, इसके प्रमाण उनके जीवन में पग-पग पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाये जाते हैं। जब भी वे कभी किसी बुढ़िया को बोझ ले जाते देखते तो रुककर उसका भार अपने सिर पर रख लेते थे और गंतव्य स्थान तक पहुँचा दिया करते थे। जिस समय विद्यासागर जी जिला विद्यालय निरीक्षक थे और गवर्नर जनरल के पास उठने-बैठने की उन्हें स्वतंत्रता थी, उस समय की एक घटना है कि एक दिन मेहतर सबेरे-सबेरे उनके पास दौड़ता हुआ आया और बोला—पंडित जी मेरी पत्नी बहुत बीमार है। कृपया चलकर उसे देख लीजिये। पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर उन्हीं कपड़ों से तुरंत उसे मोटर पर लेकर चल दिये। पत्नी को देखकर उन्होंने दवा दी और जब तक वह भली चंगी न हो गई शाम तक उसकी सेवा में बैठे रहे। ऐसे समाज-सेवी तथा दीन हितैषी व्यक्ति ही तो संसार से जाने के बाद भी अमरता का लाभ प्राप्त करते हैं।

पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर केवल एक समाज सुधारक ही नहीं थे, बल्कि वह एक विद्वान् साहित्यकार तथा पत्रकार भी थे। उन्होंने 'वैताल पंच विंशति', बंगाल का इतिहास, 'जीवन चरित', 'शिशु ऋजुपाठ', 'उपक्रमणिका' तथा 'व्याकरण कौमुदी' नामक अनेक साहित्यिक तथा शास्त्रीय ग्रंथ लिखने के साथ संस्कृत नाटकों के आधार पर शकुंतला तथा सीता वनवास नामक नाटकों का प्रणयन किया। इतना साहित्य लिखने के अतिरिक्त उन्होंने 'सोमप्रकाश', 'हिंदू पेट्रिएट' और 'बोधिनी' नामक अनेक बंगला और अंग्रेजी के पत्र-पत्रिकाएँ भी निकाली थीं और उनका संपादन भी किया।

पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर जी ने जो भी साहित्य लिखा, वह सब जनता के लाभ और हित की भावना से लिखा। जिस प्रकार अपने पद का लाभ उठाने का प्रयत्न नहीं किया, उसी प्रकार साहित्य को भी लाभ का साधन नहीं बनाया। वे साहित्य के संबंध में भी हमेशा निर्लोभ तथा निःस्पृह ही रहे।

जिस समय बंगला साहित्य के उत्थान और बंगला की शिक्षा देने योग्य ग्रंथ लिखवाने और पुस्तकों के पाठ्यक्रम के चुनने के लिए "सेंट्रल टेक्स्ट बुक कमेटी" नाम से एक समिति गठित की गई थी। उस समय शिक्षा विभाग के एक डाइरेक्टर श्री एटकिन्स

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साहब ने पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर को भी सदस्यता के लिए आमंत्रित किया। किंतु उन्होंने उस समिति में शामिल होने से इनकार कर दिया। कारण पूछने पर उन्होंने एटकिन्स साहब को पत्र में लिखा—

मुझे खेद है कि मैं आपकी उस पुस्तकें चुनने वाली कमेटी में शामिल नहीं हो सकता। इसके दो-तीन बहुत महत्त्वपूर्ण कारण हैं। सबसे पहला कारण तो यह है कि मैं स्वयं ही पुस्तकों का लेखक हूँ। हो सकता है कि कमेटी में रहकर मुझे अपनी पुस्तकें स्वीकृत कराने का लोभ हो आये। इसे मैं अपने आचरण के लिए एक बड़ा कलंक समझता हूँ। यद्यपि जहाँ तक मुझे अपने पर विश्वास है, मैं किसी भी स्थिति में व्यक्तिगत स्वार्थ से बचा रह सकता हूँ, तथापि अपने को अकारण ही किसी परीक्षा में डालना मैं किसी प्रकार भी ठीक नहीं समझता। मानवीय प्रवृत्तियों पर अधिक विश्वास करने से कभी धोखा भी हो सकता है। यह बड़ी कमजोर और चिकने पैरों वाली होती है। किस समय यह दृढ़ रह सकती है और किस समय कहाँ पर फिसल सकती है ? इसके विषय में विश्वासपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। इनकी ओर से मनुष्य को सदा सावधान ही रहना चाहिए। उन सब अनेक सावधानियों में से एक सावधानी यह भी है कि अपने पर विश्वास होने पर भी अकारण अपने को किसी परीक्षा में न डालना चाहिए।

दूसरी बात यह है कि पुस्तकों के गुण-दोषों पर कमेटी जिस सरकारी दृष्टिकोण से विचार करेगी, उससे एक ग्रंथकार की स्थिति में मेरा आदर्शों से टकराव हो सकता है। ग्रंथकार अपने विचार से ग्रंथ लिखता है, किंतु सरकारी समिति उसे अपने विचारों पर तोलेगी। ऐसी स्थिति में अन्य सदस्यों से मेरा मतभेद भी हो सकता है, जिससे समिति के कार्य में गतिरोध उत्पन्न हो सकता है।

तीसरी समिति में रहने से मेरे लिखे ग्रंथों पर समिति अपनी स्वतंत्र तथा निष्पक्ष राय नहीं दे सकती और चौथी बात यह है कि यदि समिति ने मेरा कोई ग्रंथ पाठ्यक्रम के लिए चुन भी लिया तो जनता में कदाचित् ही कोई यह विश्वास करे कि मैंने चुने जाने के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए अपने ग्रंथ की सिफारिश नहीं की अथवा किसी अन्य प्रकार से अपना प्रभाव प्रयोग नहीं किया। इस प्रकार का भय मैं अपने पर लेने को किसी प्रकार भी तैयार नहीं हूँ। इसलिए यही मेरे और समिति दोनों के हित में है कि मैं आपकी उस कमेटी में शामिल न होऊँ। आशा है कि आप मुझे मेरे स्पष्टीकरण के प्रकाश में, अनुरोध न मान सकने के लिए क्षमा करेंगे।

इन सब बातों से स्पष्ट है कि पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर अपने संपूर्ण जीवन में सर्वथा निष्पक्ष, निरपेक्ष और निष्कलंक रहने का प्रयत्न करते थे और इस चारित्रिक महानता के लिए कोई भी त्याग करने को तत्पर रहा करते थे।

न केवल सामाजिक अपितु पारिवारिक जीवन में भी पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर उसी प्रकार से उदार तथा दयालु रहा करते थे। वे कई भाई थे, लेकिन उनको छोड़कर किसी भाई की स्थिति अच्छी न थी। सबके परिवार हो जाने पर पैतृक घर में गुजारा कठिन हो गया। आवश्यकता इस बात की थी कि सबके लिये अलग-अलग निवास की व्यवस्था हो, किंतु न तो भाइयों की स्थिति ऐसी थी और न पिता की ही आर्थिक दशा अच्छी थी, जिससे कि इस आवश्यकता की पूर्ति हो सकती, अतः सभी लोग चिंतित और परेशान रहने लगे।

किंतु उदारमना विद्यासागर ने सबकी चिंता दूर कर दी। उन्होंने सबको सांत्वना देते हुए कहा कि आप लोगों में से कोई भी चिंता न करें। आप सबका कष्ट हमारा कष्ट है। हमारे पास जो कुछ है, वह सब आप लोगों का ही है। भाई-भाई में कोई अंतर नहीं होता, मैं उन व्यक्तियों में से नहीं हूँ, जो अपने भाइयों की उन्नति देखकर जलते हैं और उनका कष्ट देखकर प्रसन्न होते हैं। ऐसे निकृष्ट मन वाले लोगों को मैं पशु से भी गिरा हुआ व्यक्ति समझता हूँ और न ही मैं उन मिथ्या व्यक्तियों में से हूँ, जो अपनी मान प्रतिष्ठा के लिए समाज में तो बड़े परोपकार के काम करते हैं, किंतु परिवार और परिजनों के बीच बड़े संकीर्ण बने रहते हैं।

अपने इस कथन का पालन करते हुए विद्यासागर जी ने अपने सभी भाइयों के लिए अलग-अलग मकान बनवा दिये, किंतु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आप स्वयं पिता के उस पुराने मकान में ही रहते रहे। इतना कमाने और दूसरों पर खर्च करने वाले ईश्वरचंद्र विद्यासागर अपने लिए एक अच्छा मकान न बनवा सके। यह उदारता और यह त्याग सच्चे लोक सेवक का एक महान् लक्षण है।

विद्यासागर की दान और उदारशीलता को देखकर बहुतों ने उन्हें धनवान् समझा और ऐसा प्रसिद्ध भी कर दिया। चोर डाकू तो ऐसी खबरों की तलाश में ही रहते हैं। अतः एक रात को धन के लोभ में डाकुओं के एक जत्थे ने उनके घर पर हमला कर दिया। सारा परिवार भयभीत होकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया, किसी की समझ में न आया कि क्या किया जाए ? किंतु विद्यासागर ने अपना साहस नहीं खोया। उन्होंने परिवार के लोगों को एक गुप्त द्वार से दूसरी ओर निकाल दिया और आप भाला लेकर डाकुओं के दल का सामना करने पर तुल गये।

पंडित विद्यासागर और डाकूदल में बड़ी देर तक जद्दोजहद होती रही। तब तक उनके परिवार वालों ने बाहर जाकर गाँव वालों को खबर कर दी, तमाम लोग आ गये और डाकुओं को भागना पड़ा। इस संघर्ष में पंडित ईश्वरचंद्र को चोट भी लगी, किंतु उन्होंने दुष्टों को अपने मौलिक मंतव्य में सफल न होने दिया।

ऐसे परोपकारी, साहसी और दयावान् विद्यासागर थे, जिन्हें पाकर न केवल बंगाल अथवा भारत ही बल्कि सारी मानवता धन्य हो गई। पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर मानवता की एक पूरी तस्वीर और आदर्श की जीती-जागती मूर्ति थे। जब तक जिस देश-समाज में ऐसे परोपकारी आदर्श-पुरुष उत्पन्न होते रहेंगे, वह देश एवं समाज चिरकाल तक समुन्नत एवं गौरवशाली बना रहेगा।

❐ ❐

मुद्रक युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org